'लिख' धातु (वर्तमान ठाल)

| पुरुष | रुह्यन | िंडक्पन | बहुवन्नन |
|--------|----------|---------|----------|
| प्रथम | लिखति | लिखत : | लियान्ति |
| म ध्मम | लिखसि | लिखप; | लिखप |
| उत्समः | लिस्वामि | लिखाव : | लिखामं: |

ल ड लंबार (भ्तकाल)

| युरुष | रुक्तव्यन | - <u>हिबचन</u> | बहुवयन |
|---------|-----------------|----------------|----------|
| प्रथम | अलिखत् | उनलिखागम | अिल्यिन |
| सहप्र | अलिख: | अलिखनम् | अलियात |
| उत्सम . | उ निल्पम | 31िल्याव | उनिल्याम |

ल्टलकार (भविष्मकाल)

| पुरूष | रुठवचन | रिंड वेचन | वहवयन |
|-------|--------------|-------------|--------------|
| प्रभ | लिखिएमीत | लिखिएमतः | िलिरिव ७मी-त |
| मध्पभ | त्नि चिष्यसि | लिस्बध्ययः | लिखिष्यप |
| उट्तम | लिरिवस्मामि | िलिखिएमादिः | लिखिल्यामः |

लोटलकार (आसावाचक)

| पुरुष | रुठवचन | . डिल्मन | ल हुवन- |
|-------|----------|------------|---------|
| प्रथम | लियनु | िल-स्वताम् | लियन्तु |
| मध्पम | िलय | लियतभ | लियत |
| उटलम | लिम्बानि | लियाव | लिरवाम |

विधिलिंड लंडार (नाहिस अपि में)

| पुरुष | स्कवनन | डिक्चन | वहवयन |
|--------|---------|------------------|---------|
| प्रथम | लियेत | लिखेताम ् | लिखेमु: |
| मध्य भ | लिखे; | िलयेतम् | लिखेत |
| 3694 | लिखेमम् | लियोव | िल खेम |

धातुरं व उनके अर्प

| 3 | | | | 0 |
|------------|---------------|---------------|--|--------------|
| , | धातु | • हिन्दी अर्थ | धातु | िंहन्री अर्थ |
| 0 | भ् (भव) | होना १४% | िद्रष | डेप करना |
| 2 | गम (गच्ह) | जाना | 叉 | बोलना |
| | टृश (पश्च) | देखना | · Committee of the comm | दुहना |
| 3 | पा (पिव) | पीना | दुह | हवन करना |
| 9 | 1.0 | जीतना | पठ | पहना विश |
| 9 | जि (क्रि | | Portur | Portur |
| | ध्रा (जिध) | | and the same of th | इंसना |
| \bigcirc | पत् | <u>गिरना</u> | हस | उरना |
| (8) | वस् | रहना | भीं | देना |
| · (3) | वर | बोलना | 21 | क्रीडा करना |
| (19) | रूपा (विष्व) | <u> छहरना</u> | दिव | |
| | लम. | प्राप्त ठरना | =0 | नाश होना |
| (12) | वृत | वर्तमान रहना | 21, 18,45 | उत्पन्न होना |
| 7 | सेव | सेवा करना | जन | |
| (13) | धाव । | दौड़ना | शम् ८ | शान्त होना |
| | | D. VILI | स्रो | नाश करना |
| (15) | गुड़ | भाजन करना | में (गाम) | स्नान ठरना |
| (18) | अद् | 7 | 1 # # N 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | सुनना विवि |
| (A) | अस् | होना | भू | Tion of |
| 3 | ZA | मारना | 3114 | प्राप्त करना |
| (1) | 2 | जानन | तुद | पीड़ा रेना |
| | | जाना | स्पृश | हूना के |
| (20) | मा । | रीना | इप (इन्ह) | इच्हा करना |
| (2) | रूद) जागृ | जागना | प्रवृद्ध । | पृद्दना पूर |
| 22 | उनास. | वेंडना | # habita | मरना |
| (1) | 2A | स्रोना | मुग | होड्नके |
| 65 |) ਲੂ | करना । ए | तन ् | (केलाना |
| 4 | erent contra | (.) | | 1.9. |

holo

| धातु | हिन्दी अर्प | भारत कि | हिन्दी अर्प 6 |
|-----------------------|-----------------|-------------|---------------|
| 26) भूम | ग् मना | कूरी | क्दमा 6 |
| | फलना | रम | रमना 🖁 |
| (21) फल (28) नन्द | प्रसन्न होना | उप | कहना 💮 💪 |
| (2) खेल (2) खेल | योलगा | की | यारीदना 💍 🗲 |
| जीव | जीवित रहना | क्षाल | धोना 🧳 |
| ३) दुह | द्रोह करना | द्धिप | 'ऐंड ना |
| हिंग्से | ईण्मी करना | म्बन । | चोरना 🕻 |
| 33) कुन्द | रोना | मिल | मिलना ६ |
| 🚱 क्रीड | च्चेल ना | ग्रह | ग्रहण करना |
| 3 अर्च | पूजा करना | चिन्त | चिन्ता करना ६ |
| 36) अर्ज | क माना | भज् | मन करना |
| (37) मृष | जोतना | रच | बनाना (|
| 38 गर्ज | गर्जना | बप'् | बोना |
| (3) जप | जपना | र्वेद | बढ़ना । |
| प्रक टमज | <u>ट्यागना</u> | चर | विचरण करना |
| कि हमे | हमान करना | सह | सहन करना |
| @रध | रक्षा करना | भाष् | बोलना |
| € रह | रटना | <u> यत्</u> | प्रमत्न करना |
| (4) स्निह | स्नेह करना | ड ीम | शोमित होना |
| ५९ समृ | समरण करना | बुध, | जीनना |
| ५० नम | झुऊना | क्रि | सहारा लेमा |
| (47) A-4 | निंदा करना | भुर कि | <i>नुरामा</i> |
| (48) भूप | सजाना | न्यस | रपण्ट स्रोलना |
| १७) वन्द | वन्दना करना | भुज | भोजन करना |
| | | at Million | |

संज्ञा आ सर्वनाम के जिस रूप से उनका संबंध किया के साथ जाना जाता है। उसे कारक कहते हैं। हिन्दी में कारक 8 प्रकार तथा संस्कृत में 6 प्रकार के होते हैं तथा 2 उपकारक (संबंध व संबोधन) होते हैं।

- ा. कती
- 2. 3H
- यु करण
- 4 सम्प्रान
 - \$ अपादान
 - 6 संबध
 - 7 : अधिकरण
 - 8 संबोधन



विभिन्न - जो संख्या (प्रथमा, द्वितीया, तृतीया आदि) और कारक का बोध करती है उसे किश्वकत विभिन्न करते हैं। विभिन्न मुख्य रूप से एक प्रकार का जिन्ह है। जो कारकों और वजन का जान कराती है।

बारक तथा विभिन्न के सम्बन्ध की निम्निक्षिणित प्रकार के माध्मम से समझा जा सकता है -

| विभिन्त | कारक | न्पिङ्ग | |
|----------------|--------------|--------------|---|
| प्रथमा | कर्मी | for at some | |
| डि तीपा | कर्मी / | को | |
| तृतीया | <u>बर्</u> ण | से, के डारा | |
| -मतुषी | सम्भरान | के लिए, को | |
| पं चमी | अपारान | से (अलग होना |) |

षण्ठी सम्बन्ध का, की, के, रा, री. रे सप्मी अधिकरण में, पें, पर, ऊपर अधिकरण है, भी, प्ररे, रे

- (1) कर्त कारक (प्रथमा विभिवत) जिस व्यक्ति मा वस्तु के विषम भे लुह कहा जाता है। उसे वाक्म का कर्त कारक कारक कहते हैं। किमा का वनन रण्यं पुरुष कर्ति के अनुसार होता है।
- (2) कमी कारक (द्वितीमा विमिन्त) द्वितीमा विमिन्त कमी का संकेत करती है। जिस व्यक्ति मा वस्तु पर क्रिमा का फला पड़ता है। वहां कमी कारक होता है।
- (3) बरण कारक (तृतीमा विभिन्त) कर्ता जिस साधन द्वारा कर्म का संपादन करता है . उसमे करण कारक होता है। इसमें तृतीमा विभिन्त होती है।
- (4) . संप्रदान कारक (चरुपी कारक) जिसके लिए कोई क्रिया की जाती है . उसमें (अफित पा वस्तु में) सम्प्रदान कारक होता है। इसमें चरुपी विभक्ति होती है।
- (5) अपादान कारक (पंचमी विमिन्त) किसी स्पान से पृषक होने पर, वृषक हुर ठपिक्त मा वस्तु में अपादान कारक होता है। इसमें पंचमी विमिन्त होती है।
- (6) संबंध कारक (षणी विभिन्न) दो वस्तुओं के आपसी संबंध में होने पर उसमें संबंध कारक होता है। इसमें जण्डी विभन्नि होती है।
- (7) अधिकरण कारक -(सप्तमी विषक्ति) जहां पर मा जिसमें कार्य किया जारा है। वहां अधिकरण कारक होता है। इसमें सप्तमी विभक्ति होती है।

राम अकाराना पुल्लिंग

| 1 | | | | |
|-----------------|---------|------------|------------|----|
| वि मिक्त | रुठवचन | डिव भन | बहुवनन | |
| प्रथमा | रामः | रामी | रामा : | |
| िह ्यीमा | रामम् | रामी | रामान | 10 |
| तृतीभा | रामेग | रामाभ्याम् | राभे : | |
| -त्रतुषीं | रामाप | रामाञ्याम् | रामेम्प: | |
| पंचमी | रामात | रामाभ्याम् | रामेक्म: | |
| षण्ठी | रामस्य | रामपी ; | रामाणाम् | |
| सप्तमी । | रामे | राममी: | रामेषु | |
| सम्बोधन | हे राम! | हे रामों। | हे रामा: । | |

⇒ बालड, देव, वृक्ष, सूर्प, सर, असुर, मानग, अश्व, गण, ब्राहाण, धनित्रम, स्वर्द्ध, हान्न, शिष्म, रिवस, लीड, ईश्वर, भक्त आदि अवारान्त पुल्लिंग संत्राओं के रूप इसी प्रकार होगें।

| विमानित | रण्कवनन | िक्रवभन | बहुक्त्रन |
|----------|----------|-----------|-----------|
| प्रथमा | रमा | रमे | रमा: |
| िद्वतीया | रमाम. | रमे | रभा: |
| तृतीया | रममा | रमाभ्याम् | रमाभि: |
| यतु चरि | र मामें | रमाभ्याम् | रमाभ्यं; |
| पंचमी | रमामा: | रमाम्माम् | र माम्प: |
| ष एठी | रभाषाः ; | रमगो : | रमाणाम् |
| सदमी | र्मापाम | रमपो: | रभास् |
| सम्बोधन | हे रमें। | हे रमे। | हेरमाः। |

न शब्दों के हम नलते हैं।

फल - (अक्षेरान्त मपुंसकलिङ्ग)

| विभिक्त । | रुढवचन | क्रिक्यन | वहुवनन |
|-----------|---------------|------------------------|-----------|
| प्रथमा | फलम् | . यत | सलानि |
| िद्धतीमा | फलम् | फले । | युलानि |
| तृतीमा | फलेन | पुला भ्याम् | पुलेम्म ! |
| चतुर्थी 🗀 | पुलाम | फलाभ्याम् फलाभ्याम् | फले इम ; |
| पंत्रमी | फलार फलस्म | प्रलामो ; | य ला नाम |
| षण्ठी 🐃 | फल प | पुलमी: | फले प |
| सम्बीधन | हे फलम् | हे पत्ले | हे प्रमान |

नोट- 'फल' शब्द की तरह ही पुस्तक पात्र और पुष्प आदि शब्दों हैं।

रहरि' इजारान्त पुल्लिंग

| | | 1 | |
|-----------------|----------|--------------------|---------------------|
| विभिक्त | रायवसर | दिवयन | बहुवभन |
| प्रथमा | हरि: | इरी | हरय: |
| ि इतीमा | इरिम | स्री नाम्या | दृरिन |
| तृतीमा | इरिणां | ट रिक्रमाम् | इरि भि: |
| चतुर्षो | हरमे | ह रिभ्माम् | हरिभ्म ; |
| पंचमी | हरे : | इरिक्माम् | इरिम्प : इरीणाम् |
| पुण्डी | हरे: | हर्यों: | 1841/9 |
| सप्तमी | हे हरी | ह्यों: हे इस | हरिषु |
| सम्बीधन | हे हरि:। | ह हरा - | 3 6 1 7 1 |

'नदी' ईकारान्त स्नीलिंग

| विश्विकत | रण्डवभन | द्भिवन्त्रन | बहुबचन |
|------------|----------|-------------|------------|
| प्रथमा | नरी | नदा । | ा मघः |
| िद्ध ती भा | नदीम | नद्यों । | निरी वि |
| तृतीपा | नघा | न दी स्माम् | न दी मि |
| चतुर्पी | मधे | नदी मगम् | निकीम्भं : |
| पंत्रमी | नघा: | न दी म्माम् | नदीम्प: |
| घण्ठी | निधाः | नद्यो: | -र्हीभाग |
| सप्तमी | न ह्याम् | नद्यो : | जिरीषु |
| संबोधन | हे नदी | हे नहीं 🕽 | हे नद्यः। |

' गुरु' उदारान्त पुल्लिंग

| | CIII | | 1 |
|---------|----------|------------|----------------|
| विभिक्त | रम्भगमन | द्विव चन | ब हुवयन |
| प्रपमा | गुर: | गुर | गुरव ; |
| ि इतीया | गुरुम् | गुरु | 12. 12. |
| | मु सणा | गुरुम्पाम् | गुरुभि |
| तृतीपा | गुस्वे | गुरुम्माम् | गुरुभ्यः |
| चतुषी. | गुरो: | गुरुम्पाम् | गुरुष्यमः |
| यंचमी | गुरो; | गुनी: | मुरुष्णाम |
| षण्ठी | | गुर्रे : | मुरुणाम गुरुषु |
| सप्तभी | गुरो | हे गुरु | हे गुरवः |
| सम्बोधन | हे गुरु: | 5 110 | |

'धेनु' उठारान्त स्त्रीलिंग

| विभावत | रण्डवनन | डिवयन | जहवनन |
|---------------------|----------|-------------------|---------------|
| जिल्लमा | धेनु : | धेन् | थेनव: |
| <u> डितीमा</u> | धेनुम् | धेन् | धेन्; |
| तृतीम | धेन्वा | धेनुभ्याम | धेनुमि: |
| -चतुषो ^र | धेन्वे | थेनुम्माम् | शेनुम्म : |
| पंत्रमी | धेन्ता : | <u>चेनुभ्याम्</u> | थेनुम्प : |
| षण्ठी | चेन्वा : | स्रेन्बी; | ी हो न्तुनाम् |
| सप्तमी | धेन्वाम् | चेन्वो: P | चेन षु |
| संबोधन | हे धेनु: | हे धेन | हे घेनव ; |

'मधु' उठायाना नपुसक्रिंग

| विभिक्त | रुकव भन | - दिवसन - स्वासन | बहुवमन |
|---|--------------------------------------|---|--|
| विभिक्त प्रथमा द्वितीमा तृतीमा तृतीमा चुर्चे पंत्रमी घष्ठी | सधु मधु मधुन मधुन: मधुन: | हिवयन संघुनी संघुनी संघुम्पाम् संघुम्पाम् संघुम्पाम् संघुनी ; | बहुबनन मध्नि मध्नि मधुभाः मधुभाः मधुभाः मधुभाः |
| संजीधन | मधुनि हे मधु | सधुनी : हे मधुनी | मधुषु है मध्नि |

- प. आचार: परमी धर्म:।
- २. विद्याचनं सवीयनप्रधानम्।
- ३ विद्या ददाति विनमम्।
- ४ शीलं परं भूवणम् ।
- प् धमेण लमते सर्वम् ।
- ६ श्रद्धावान् लमते नानम्।
- 6 . परोपकाराम सतां विभ्तम : 1
- सत्पमेव जयते मान्तम।
- ६ माता शतु: पिता वेरी घेन बोलो न पाठित: 1
- वः दुर्जन: परिहर्तिः

स्माधितानि

- व. सत्वं वदं।
- २ धर्म -पर।
- इ मान्देवी भव।
- ४ पितृदेवी भव।
- ५ आनामिदेवो भव।
- ६ विद्याविहीनः पशुः।
 - ७ : अतिषिदेवो अग: ।
 - ट. अहिंसा परमी धर्म: 1
- ६ परोपकार: पुग्माम पापाम परपीडनम्।

स् माषितानि

- परापत्रस्थितं तोमम् . धले मुक्ताफलिमम् ।।
- २- पातितोडपि कराघाते-रूपतट्येव कन्दुकः। प्रामेण साधुनृत्तानाम - स्पापिन्यो विपत्तमः॥
- 3 न गोराहार्पम् न च राजहार्षम्, न भातृमाल्मं न च भारति। ०ममे कृते वर्धत रूव नित्मं, विद्याद्यनं सर्विधनप्रदानम् ॥
- ४. सा विद्या मा विमुक्तमे।
- ध उद्यमेनैव हि सिद्यन्ति, कार्पाणि न मनोरथै। न हि सुप्तस्प सिंहस्य, प्रविशन्ति मृगाः॥
- ६ सत्मं ब्रूपात् प्रिपं ब्रूपात् त्न ब्रूपात् सत्पमप्रिपं । प्रिपं न नानृतं ब्रूपात् रूष धर्मः सनातनः ।।
- 6 मूर्वस्य पञ्च चिन्हानि गार्ते दुर्वचनं तथा । को धश्च दृहवादश्य परवाक्ष्मेण्वनादरः ।।
- ट. क्षण्याः ठणस्त्रेव विद्यामर्प च साध्येत्। क्षणत्यागे ठुतो विद्या ठणत्यागे ठुतो धनम्।।
- ४ नारिकेल समाकारा दृश्यन्तेडिप हि सज्जना: 1 अन्ये 'बदरिकाकारा बहिरेव मनोहरा: 11
- 90 हाते शोको न कर्रियो अधिष्प नेव चिन्त्रयेत् । वर्तमानेन कार्वेन वर्तयन्ति धिन्नक्षणाः ॥

in the second action in

- ११- अतितृष्णा न कर्तट्या तृष्णां नैव परित्य जेत्। शने: १नैश्न भोकतत्यं स्वयं वित्तमुपाणितम्॥
- 92 लो मस्लानि षापानि संस्थानि तथेव न । लोमात्त्रवरीते वैरं अतिलोमातिन श्वाति ॥
- १३ अभिवादनशीलस्य निर्मं वृहोपसे विन : 1 अत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम्॥
 - १४ विद्या मित्रं प्रवासेषु भाषी मित्रं गृहेषु न । व्याधितस्यीषधं मित्रं धमी मित्र मृतस्य न ॥
 - १५ मधा हि रुकेन जड़ेण न रथस्य गितिमीवेत्। रुवं पुरुषकारेण विना दैवं न सिद्धिति॥
 - १६ पुस्तकस्था तुमा विद्या पर हस्तगतं धनं। कार्यकाले समुत्पने न सा विद्या न तर् धनं।।
 - १७ उत्साही बलावानार्य नास्त्युत्साहात्परं बलम् । सोत्साहरूप न्य लो केषु न फिंनियपि दुलीमभ् ॥
 - वह. उदमे समिता रक्तो रकतः श्वास्तममे तता। सम्प्रतो च विपत्तो च महतामेक रपता।
 - वर्ठ नमिन्न प्रिलिंगे वृक्षाः, निमन्त गुणिनो जनाः। शुरुकृक्षाश्च मूर्वाश्च न नमिन्त करानन ।।
 - २० . अमं निज: परो वेति गणना लघुनेतसाम् । उरारचरितानां तु वसुधैन लुटुम्बनम् ॥

गीतावन्यनामृतानि अर्थान्

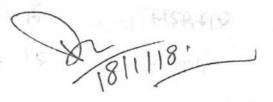
१- त्वमादिदेगः पुरुषः पुराणः ।

त्वमस्य विश्वस्य परं निद्यानम् ।

वेत्वासि वेद्यं च परं च धामः

त्वमा तरं विश्वमनन्तस्य ।।

- 2. यदा पदा हि धर्मस्य ग्लानिष्ठिति भारत। अञ्मुल्पानधर्मस्य तदाल्मानं सृजाम्यस्म ॥
- ३ परित्राणाम साधूनां विनाशाम न दुण्हताम्। धर्मसंस्थापनाथिम सम्मनामि मुगे मुगे।।
- ४ · कमिनाधिरास्ते मा फलेषु छरात्रन । मा कमीयल हेतुर्भः मा ते सङ्गोऽस्टबकमीण् ॥
- ५ वासंसि जीणिनि पषा विद्याप, नगानि ग्रम्नणाति नरोडपराणि / तथा शरीराणि विद्याप जीणि-न्यन्पानि संपाति नगीन देही।
- ६ मैन हिन्दीना शस्त्राणि मैनं इही पावड: 1 न मैनं वन्ले दयन्टपायो न शोषपित मारुत: 11
- 6 सुखदुः से समे कृत्वा, लामालार्मे जमाजर्भे। ततो पुर्धाप पुज्यस्व नैवं पापमवाप्स्पिस ।।



संस्कृत का सहत्व

(1) - संस्कृत का भाषामी महत्व

संस्कृत भाषा विश्व की प्राचीन भाषाओं में से एक है। इसका साहित्म अत्मंत समृद्ध रुवं विशाल है। भारत में आर्प भाषाओं की जननी संस्कृत को ही कहा जाता है।

(2) संस्कृत भाषा का आस्पारिमक महत्व

हमारे आध्मात्मिक दृष्टि से भारतीम समाज में संस्कृत भाषा का महत्व सबैपरि है। प्राचीन काल में मनु, कृष्ण, महावीर, बुह तथा शंकराचार्य आदि ने भारत वर्ष में आहमात्मिकता को धोषित किमा आधुनिक काल में नानक, तुलसी, रामकृष्ण परमहंस, दमानंद सरस्वती, विवेकानन्द, महात्मा गांची आदि ने भारतीम आद्मार्त्मिकता को सजीव बनामे रखा. जिसका आज भी अस्तित्व बना हुआ है।

(3) संस्कृत भाषा का सांस्कृतिक महत्व

भारतीम संस्कृत संस्कृत की ही देन हैं। हमारे भारतीम मानव जीवन में संस्कृत का प्रमाव दिखाई देता है। हमारे देश में किसी का सम्मान करने के लिए प्रणाम रूवं जरण स्पर्श संस्कृत की ही देन हैं। साप ही आशीविर हेतु ' आगुस्मान भवः' शबर संस्कृत की ही देन ही देन हैं।

(4) संस्कृत भाषा का धार्मिक महत्व

भारत धर्म प्रधान देश है। अतः संस्कृत गरंधों में धर्म का विस्तृत विवेचन मिलाता है। धार्मिक अनुण्यान , यस का महत्व , जन्म से मरण तक समस्त संस्कार , चारों वणी रूवं चारों आश्रम तीन ऋण आदि का विस्तृत विवरण संस्कृत गरंधों में मिलता है। वेद , उपनिषद , पुराण , रामामण , श्रीमरमागवत गीता , सुरस्कांड अगरि धर्मित्रधों की धूजा होती है। यह संस्कृत भाषा में ही होतेहै

(5) संस्कृत भाषा का दमवसामिक महत्व

भारतीम समान में व्यवसाम की दृष्टि से संस्कृत भाषा का अति महत्व है। ज्योतिष, नारक, संगीत, न्याम, विकान, जितिकता, वास्तुकला, भूषणकला आदि पर उन्न कोरि के ग्रेप संस्कृत भाषा में उपलब्ध हैं, जिनका अध्यमन करके व्यक्ति, व्यवसामिक संयलता प्राप्त कर रहे हैं।

(6) संस्कृत भाषा का राजनैतिक महत्व

वर्तमान समय में त्रीम विश्व मुद्ध की सम्भावना से समस्त विश्व संत्रस्त है। इस परिस्थितियों में संस्कृत के अमर वाक्य सबे भवन्तु सृच्चिन:, सबे भवन्तु निरामपा, अहिंसा परमो धर्म, वसुधेव कुटुम्बरुम, रूवं विश्ववधुव्व आदि मानव के द्रिम मानव के प्रति प्रेम द्वर्यन कर इस संसार की रक्षा करते हैं।

(7) संस्कृत भाषा का वैसानिक महत्व

विज्ञान की दृष्टि सो भी संस्कृत आणा का विशिष्ट महत्व हैं। आपिमट्ट का आपिमट्टीयम् प्रमाणिक ग्रंप , वराहिमिट्टर का स्पि सिज्ञान जिल्ला विज्ञान में परक , भास्करानाम , ब्रहापुर और श्रीपित जैसे विज्ञानों की बीजगणितीम रचनार्थ आदि संस्कृत भाषा में ही उपलब्ध हैं। को टिल्म का अब्बिशास्त्र , पाणिनि की अण्याहमापी आदि भी संस्कृत में ही हैं।

(8) राष्ट्रीय रण्डता की दृष्टि से संस्कृत भाषा का महत्व

भारत में भाषा, जाति, धर्म आदि के कारण विभिन्नतार हैं।
पिर भी संस्कृति एक हैं। संस्कृत के साहित्यकार संपूर्ण भारत
को एक राष्ट्र मानकर ग्रंच की रचना करते हैं।